Quest Journals
Journal of Education, Arts, Law and Multidisplinary
Volume 14 ~ Issue 6 (Nov. – Dec. 2024) pp: 19-23
ISSN(Online): 2347-2895
www.questjournals.org

Research Paper

नन्द किशोर आचार्य के नाटकों में राजनीतिक चेतना

रोहित कुमार पटेल
वरीय शोधप्रज्ञ
विश्वविद्यालय हिंदी विभाग
ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा

शोध सारांश :–

नन्द किशोर आचार्य द्वारा लिखे गए तमाम नाटकों के केंद्र में राजनीति है। उन्होंने इस तथ्य को महसूस किया है कि राजतंत्र हो या प्रजातंत्र, बागडोर हमेशा राजाओं अथवा नेताओं के हाथ में होती है। जनता केवल प्रपंचों से छली जाती है। पौराणिक, ऐतिहासिक और समकालीन युग को केंद्र में रख कर लिखे गए उनके नाटक इस बात का प्रमाण हैं कि गरीब जनता और विशेष कर स्त्रियों की स्थितियाँ कभी नहीं बदलतीं। उनकी नियति में शोषण–चक्र में पिसना ही लिखा होता है। नाटककार नन्द किशोर आचार्य ने अपने नाटकों में समकालीन भारत के राजनीतिक परिदृश्य का विशेष ख्याल रखा है। देश को स्वतंत्रता मिलने के कुछ ही समय बाद लोगों का शासन व्यवस्था से मोहभंग क्यों हुआ इसका प्रामाणिक उदाहरण 'पागलघर' में मिलता है। आज भी जो लोग तत्परता से सरकार से उसकी गलत नीतियों पर सवाल करने की हिमाकत करते हैं उन्हें सरकार अपने हाकिमों द्वारा पागल घोषित करवा कर पागलखाने में भर्ती करवा देती है। सदियों से राजनीतिज्ञों का यह घिनौना खेल बदस्तूर जारी है। नन्द किशोर आचार्य जैसे प्रगतिशील नाटककार ने अपने नाटकों में बुनियादी राजनीतिक सवालों को उठाकर पाठकों की चेतना को आंदोलित करने का प्रयास किया है।

बीज शब्द :– *राजनीति, पितृसत्तात्मक, राजव्यवस्था, शोषण, असहिष्णुता, असंवेदनशील, स्त्री, भ्रष्टाचार, लोकतंत्र*

प्रस्तावना–

सम्यक रूप से अगर हिन्दी नाटकों के विकास की प्रक्रिया का अनुशीलन किया जाए तो यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि भारतेंदु मंडल के साहित्यकारों ने नाट्य विधा की परिकल्पना बहुत सोच–विचार कर की थी। हिंदी साहित्य को आधुनिकता से परिचित कराने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र ने परतंत्र भारत की राजनैतिक अवस्था का यथार्थ चित्रण अपने नाटकों में किया है। दरअसल वे भारत की तत्कालीन स्थित से हर भारतीय को रूबरू कराना चाहते थे। उक्त तथ्यों को यहां स्पष्ट करना इस लिए आवश्यक है क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि हिंदी नाटकों के उद्भव के केंद्र में तत्कालीन राजनीति रही है। भारतेंदु युग के समय भारत की जो राजनीतिक परिस्थिति थी, अगर वह उससे बेहतर होती तो शायद चली आ रही साहित्यिक परिपाटी में कोई विशेष अंतर न आया होता। चूंकि स्थितियां इतनी त्रासद थी, जनता में शिक्षा का घोर अभाव था ऐसे में सामान्य जनमानस को वास्तविकता का साक्षात्कार कराने हेतु साहित्यकारों ने नाटकों का सृजन किया। परवर्ती युग के नाटककारों ने भी अपनी रचनाओं में राजनीति को केंद्र में रखा। प्रसादोत्तर युग में नन्द किशोर आचार्य ने अपने अधिकांश नाटकों में राजनीतिक कथ्य को मुख्य आधार बनाया है। कुछ नाटक यथा 'पागलघर', 'बापू' आदि में जहां उन्होंने समकालीन राजनीति पर तीखा व्यंग्य किया है। वहीं 'गुलाम बादशाह', 'जिल्ले सुब्हानी' आदि नाटकों में उन्होंने ऐतिहासिक कथानक के आधार पर तत्कालीन राजनीतिक स्थिति की विडंबनाओं को दर्शाया है। 'हस्तिनापुर' जैसी रचना में उन्होंने पौराणिक घटनाक्रम के आधार पर उस युग की

राजनीतिक कालिमा का यथार्थ प्रस्तुत किया है। पितृसत्तात्मक राजव्यवस्था में स्त्री का शोषण किस प्रकार होता था, इस पर बहुत सूक्ष्म दृष्टि 'हस्तिनापुर' में डाली गई है।

वर्तमान राजनीति की विद्रूपता पूरी अर्थवत्ता के साथ 'पागलघर' में चित्रित हुई है। ऐसा लगता है कि नेताओं ने देश को हाईजैक कर लिया है। समकालीन युग में बुद्धिजीवियों पर निरंतर प्रहार हो रहे हैं। सरकार से भ्रष्टाचार के संदर्भ प्रश्न करना राष्ट्रद्रोह करार दिया जाने लगा है। ऐसी विषम परिस्थितियों को ही देख कर नन्द किशोर आचार्य ने 'पागलघर' जैसे नाटक की सृष्टि की है। नाटक का एक महत्त्वपूर्ण पात्र 'नेता' लेखक को कहता है–

"शास्त्रों में योग साधना का लक्ष्य विचारशून्य समाधि है। विचार की छाया तक न रहे मन में। पर तुम्हारी किताबें छूत की तरह फैलाती हैं विचारों को। तुम राष्ट्र के मन में विकार पैदा करते हो। भंग करते हो उस की समाधि को।"[1]

सत्य यह है कि आज भी ऐसा ही हो रहा है। वेद, पुराण आदि को आधार बना कर, उनकी गलत व्याख्याएं कर के बुद्धिजीवियों को कुचलने का प्रयास सरकार एवं सरकारी एजेंसियों द्वारा किया जा रहा है। 'विचारशून्य' अवस्था का उक्त पंक्तियों में कितना अनर्गल अर्थ नेता द्वारा लगाया गया है यह एक सामान्य व्यक्ति भी समझ सकता है परंतु पूरी व्यवस्था उसी का समर्थन करती नजर आती है। 'वरिष्ठ डॉक्टर' , 'अफसर' 'सिपाही' सभी लेखक की हत्या में भागीदार बनते हैं और जब युवा डॉक्टर उन लोगों के द्वारा की गई हत्या का विरोध करता है तब एक बार फिर नेता कहता है–

"पकड़ लो इसे। पागल हो गया है यह।"[2]

एक बार फिर नेताओं द्वारा बनाई हुई व्यवस्था में युवा डॉक्टर के पिसने का चित्र लेखक खींचते हैं। नाटक वहीं पर समाप्त हो जाता है। स्पष्ट है कि समकालीन राजनीतिक व्यवस्था भ्रष्ट राजनीतिज्ञों, अपराधियों, बाहुबलियों और व्यवस्था के गुलामों को ही प्रश्रय देती है। बुद्धिजीवियों, सदाचारियों और सत्ता से प्रश्न पूछने वालों को या तो जेल जाना पड़ता है या जबरन पागलखाने में डाल कर उनकी हत्या कर दी जाती है।

आचार्य जी ने राष्ट्रपिता गांधी पर केंद्रित नाटक 'बापू' में यह स्थापित करने की कोशिश की है कि अंग्रेजों ने गुलाम भारत का भी उतना शोषण नहीं किया जितना आजादी के बाद भारत की मिट्टी में जन्म लेने वाले नेता कर रहे हैं। यह चिंता उन्हें खाए जाती है कि जिन उद्देश्यों को लेकर देश की कोटि–कोटि जनता ने आजादी की लड़ाई में भाग लिया था वे भारतीय नेताओं से ठगे जाने के बाद क्या करेंगे। स्वयं गांधी जब उनके क्रियाकलापों के समक्ष विवश थे तो वे सामान्य जनता की स्थिति को बखूबी समझ सकते थे। गांधी की मनःस्थिति निम्नांकित पंक्तियों में व्यक्त हुई है–

"पर ये मेरे अपने लोग मेरे साथी जो मुझे 'बापू' कह कर बुलाते हैं ये कील-काँटे तो उन्होंने बिछाये हैं ये घाव तो उनके दिये हैं और विडम्बना यह कि उन्हें दिखते ही नहीं ये और खून जो मेरी आत्मा के इन घावों से बह रहा है।"[3]

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि आजादी के ठीक बाद ही नेताओं ने एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था का निर्माण किया जो कहने को तो लोकतंत्र है परंतु उसमें 'लोक' कहीं नहीं है। नन्द किशोर आचार्य ने उन्हीं राजनीतिक विषमताओं को 'बापू' नाटक में चित्रित किया है।

'किसी और का सपना' भी नन्द किशोर आचार्य का एक राजनीतिक चेतना सम्पन्न नाटक है। इस नाटक में भी आचार्य जी ने समकालीन राजनीतिक व्यवस्था पर चुटिले व्यंग्य किए हैं। नाटक का एक पात्र कहता है–

"राजखाज नहीं समझे? यानी सत्ता की खुजली। नहीं तो हम सब क्यों है राज में? कभी-कभी महाराज को भी खुजली उठती है तो वे हमें बुलाते हैं, सलाह-मशविरा करते हैं..."[4]

दरअसल भारतीय राजनीति में व्याप्त चाटुकारिता और चापलूसी को आचार्य जी ने अपने उक्त नाटक में उद्घाटित किया है। चाटुकारिता कर के सत्ता के शीर्ष पदों पर बैठे लोग चाहते हैं कि सरकार जनता की वास्तविक स्थिति से वाकिफ ही न हो, तभी तो नाटक का एक पात्र कहता है–

*"यह मंत्रीजी की बुद्धि का कमाल है महाराज की आज जनता अपने घरों में ताला लगाना फ़ज़ूलख़र्ची समझती है।"***5**

उक्त पंक्ति से स्पष्ट है कि जिस देश में हत्या, बलात्कार, अपहरण, दंगा, फसाद आम है वहां चाटुकार ऐसी ही बातें कर के सत्ताधारियों को बरगलाते हैं।

अपने ऐतिहासिक नाटकों में भी नन्द किशोर आचार्य ने राजनीति को ही केंद्र में रखा है। फैजल अल्काजी 'गुलाम बादशाह' के संबंध में लिखते भी हैं–

*"गुलाम बादशाह जितना बल्बन के अन्तर्द्वन्द्व और उसके आखिरी दिनों का नाटक है उतना ही आज के राजनीतिक परिदृश्य का भी।"***6**

'गुलाम बादशाह' का सम्यक अनुशीलन करने पर एक बात स्पष्ट रूप से लक्षित होती है कि राजनीतिक षडयंत्रों में जनता ही है जो चहुंओर पिसती है। नाटक का एक पात्र इस दृष्टि से कितनी मानीखेज टिप्पणी करता है वह द्रष्टव्य है– *"ये सब अपने लिए ही तो किया सुल्तान ने कि उसकी ताकत को चुनौती न दे सके कोई। अवाम बेचारों को तो दहशत में ही रहना है- लुटेरों की दहशत न सही, सुल्तान की सही।"* उपर्युक्त पंक्तियां आज के यथार्थ को उद्घाटित करती हैं। यद्यपि सरकारें 'राष्ट्र की शक्ति' आदि की बात करती हैं परंतु सच्चाई यह है कि वे अपनी ताकत बढ़ाती हैं और अपने फायदे के लिए किसी भी स्तर तक जाने के लिए तैयार रहती हैं। अपनी ताकत बढ़ाने के लिए अगर उन्हें देश के नागरिकों की कुर्बानी देनी पड़े तो वे पल भर भी नहीं हिचकते। नाटक का एक पात्र इस संदर्भ में कहता भी है कि–

*"इतनी कि बेगुनाह लोग मार डाले जायें और उनकी लाशें सरे-आम लटका दी जायें।"***8**

सत्ता का चरित्र ही यही होता है, आम आदमी के लिए सोचना और उनके हितों की रक्षा करने का प्रयास करना केवल हवाई बातें हैं, सत्य से उसका कोई लेनदेना नहीं है।

ऐतिहासिक नाटक 'जिल्ले सुब्हानी' में भी तत्कालीन युग की राजनीति का विद्रूप चित्रण किया गया है। ब्रजरत्न जोशी ने 'जिल्ले सुब्हानी' के संदर्भ में लिखा है–

*"इस नाटक में आचार्य ने खिलजी वंश के पतन के बाद भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में व्याप्त अराजकता क्रूरता, नैतिक अवमूल्यन, सत्ता हस्तातरण और सत्ता के दोहरे चरित्र-चित्रण के साथ-साथ समकालीन परिदृश्य की विभिन्न समस्याओं, यथा-सत्ता द्वारा मुक्त बाजार व्यवस्था का समर्थन, राजनीतिक अस्थिरता लगभग फासीवादी किस्म की धार्मिक असहिष्णुता और समलैंगिकता को उठाया है।"***9**

स्पष्ट है कि सत्ता की आड़ में कोई भी ऐसा दुष्कर्म शेष नहीं रह गया था जिस से तत्कालीन बादशाहों और उनके चापलूसों–चाटुकारों ने परहेज रखा हो। नाटक का पत्र 'काफूर' बेशर्मी से कहता है–

*"अवाम की फिक्र छोड़िए, वे हमेशा हुकूमत के साथ होते है।"***10**

एक अन्य पात्र 'तौबा' उपर्युक्त पंक्ति को और आगे बढ़ाते हुए कहता है–

*"हुकूमत का फ़र्ज है जानो-माल की हिफाजत! जिस के पास दोनों हैं, उस की हिफाजत जियादा जरूरी है। सिर्फ जान की तो वैसे भी क्या कीमत है? वो भी तो इसी पर मुन्हसिर है कि उस के पास माल कितना है।"***11**

उक्त पंक्तियों से शासन का असंवेदनशील चरित्र स्पष्ट होता है।

पौराणिक कथाओं के आधार पर नन्द किशोर आचार्य ने जिन नाटकों की रचना की उनमें भी तत्कालीन युग की राजनीति का प्रस्तुतीकरण हुआ है। राजनीति की वजह से आदिकाल से स्त्रियों का कितना शोषण हुआ है, इसका जीता-जगता उदाहरण 'हस्तिनापुर' में दिखाई पड़ता है। अपने को सामर्थ्यवान और शक्तिशाली कहने वाले राजाओं अथवा सम्राटों ने स्त्रियों को केवल वस्तुवादी दृष्टि से देखा। नाटक की पात्र 'अम्बिका' शोषण के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करते हुए कहती है-

"अनचाहे समर्पण की यातना न महामुनि जान सकते हैं न आप। आप लोगों के लिए स्त्री वंशवृद्धि का साधन है बस। उसका अपना भी मन है, कामना है.... कौन जानता है यहाँ ?"[12]

एक स्त्री द्वारा किया गया उपर्युक्त प्रश्न आज भी पुरुष समाज के समक्ष एक चुनौती बना हुआ है। नाटक की कथावस्तु भले ही पौराणिक है परंतु समकालीन स्थिति में भी बहुत प्रासंगिक है। अपना नफा-नुकसान देख कर आज भी बड़े राजनीतिज्ञ स्त्रियों का सौदा करते हैं। नन्द किशोर आचार्य ने 'हस्तिनापुर' में उसी तथ्य को उद्‌घाटित करने की कोशिश की है। 'भीष्म' जैसे ज्ञानी व्यक्ति भी केवल कुरूवंश के विषय में सोचते हैं, स्त्री की पीड़ा और भावना की उन्होंने भी उपेक्षा की है। उनकी दृष्टि में पहले पायदान पर राजनीति आती है तब स्त्री का स्थान है। नन्द किशोर आचार्य ऐसी असंवेदनशील सोच के खिलाफ खड़े नजर आते हैं। राजनीति की वजह से स्त्रियों की जो दयनीय हालत हुई है उसे उद्‌घाटित करते हुए शुभा कहती है-

"स्त्री चारों ओर से कितनी त्रस्त रहती है, यह केवल हम जान सकती हैं। पुरुष इस भय को नहीं समझ पाते-कुरुवंश के पुरुष तो बिल्कुल नहीं जो स्त्री को उपभोग की वस्तु मानते रहे-अधिक से अधिक अपना क्षेत्र।"[13]

राजसिंहासन पर केवल एक निर्दोष राजकुमार काबिज हो, इसके लिए भीष्म जैसे लोग भी चाहते हैं कि स्त्री अपने हृदय का कत्ल कर के किसी गैर पुरुष के साथ वह सब करे जो वह अपने पति के साथ करती है। अम्बिका अंततः आपे से बाहर होकर भीष्म से सवाल करती है-

"यही है क्या धर्म ? बिना इच्छा के अपने को सौंप देना ? बलात्कार क्या है फिर ?"[14]

स्पष्ट है कि नन्द किशोर आचार्य ने राजनीति की आड़ में चलने वाले घृणित और निंदनीय पौराणिक घटनाक्रमों को प्रश्नांकित करने में कोई समझौता नहीं किया है।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि नन्द किशोर आचार्य ने अपने नाटकों के माध्यम से समकालीन राजनीति पर करारा प्रहार किया है। नकारात्मक राजनीति समाज को किस प्रकार अंधेरे कुएं में ढकेल देती है इसका जीवंत चित्रण 'पागलघर' जैसे नाटक में हुआ है। वह व्यक्ति जो समाज को एक नई दिशा दिखा सकता था, उसकी हत्या में पूरी राजनीतिक व्यवस्था शामिल हो जाती है। वह युवा डॉक्टर जो अति संवेदनशील था, उसका भी व्यवस्था लेखक सा ही हश्र करना चाहती है। महात्मा गांधी को केंद्र में रख कर उनके द्वारा लिखे गए 'बापू' नाटक में भी आज की राजनीतिक सच्चाई को स्वयं बापू ही उद्‌घाटित करते दिखाई पड़ते हैं। ऐतिहासिक और पौराणिक परिप्रेक्ष्य में भी जो नाटक नन्द किशोर आचार्य ने लिखे हैं वे भी तत्कालीन राजनीति से संबद्ध हैं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि नन्द किशोर आचार्य की दृष्टि में साहित्य और राजनीति एक-दूसरे से भिन्न नहीं है। वे मानते हैं कि दोनों के बीच अन्योन्याश्रित संबंध है। इसी लिए आचार्यजी के अधिकांश नाटकों में युगीन राजनीति की स्पष्ट छाप नजर आती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. रंगयात्रा, पागलघर, नन्द किशोर आचार्य, सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर, संस्करण-2014ई., पृष्ठ-335
2. वही, पृष्ठ-337

3. वही, बापू, पृष्ठ–337

4. वही, किसी और का सपना, पृष्ठ–283

5. वही, पृष्ठ–285

6. वही, गुलाम बादशाह, पृष्ठ–275

7. वही, पृष्ठ–263

8. वही

9. जनसत्ता, ब्रजरत्न जोशी, दिनांक–02.01.2005

10. वही, जिल्ले सुब्हानी, पृष्ठ–178

11. वही, पृष्ठ–191

12. वही, हस्तिनापुर, पृष्ठ–116

13. वही, पृष्ठ–114

14. वही, पृष्ठ–115